तेली समाज: एक अनकहा इतिहास

व्यापार, युद्ध और सत्ता की एक ऐतिहासिक डॉक्यूमेंट्री

TELISOCIETY.COM

Teli Samaj

THE TAPESTRY OF THE KOLHU.

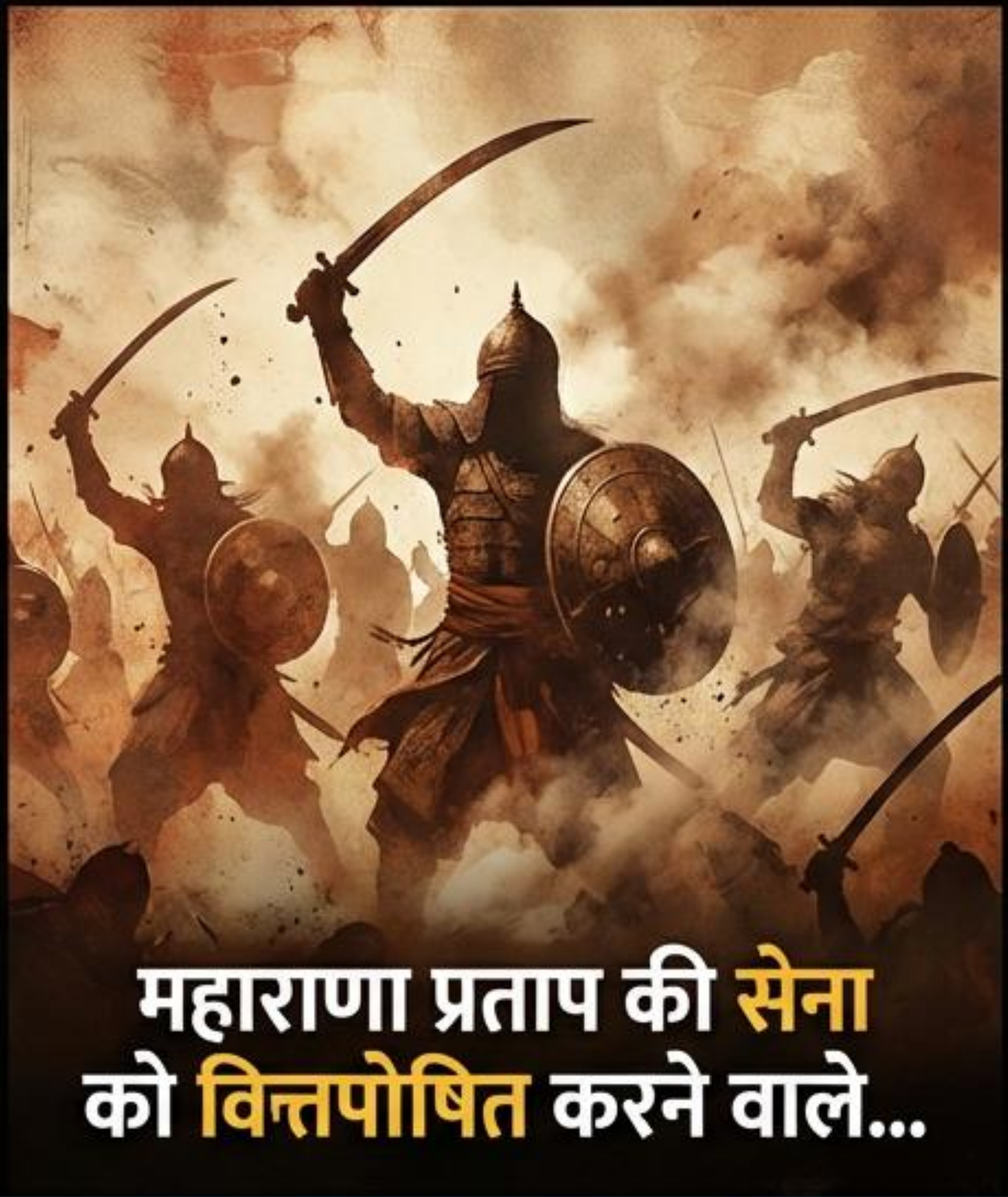

**एक ऐसा समुदाय जिसने समय के कोल्हू में पिसकर,
इतिहास का सबसे मूल्यवान अर्क निकाला है।**

‘तैल’ से ‘तेली’ तक: शब्द और लोककथाएं

- **संस्कृत मूल:** ‘तैलिक’ (Tailik) शब्द से उत्पत्ति, जिसका अर्थ है तिलहन या तेल।
- **प्राचीन व्यवसाय:** पारंपरिक रूप से कोल्हू में तिल, सरसों और अन्य बीजों को पेरकर तेल निकालने वाले।

TELISOCIETY.COM

Teli Samaj

शिव, गणेश और प्रथम कोल्हू का जन्म

क्रोध और विनाश: माता पार्वती के रक्षक (गणेश) का सिर भगवान शिव द्वारा अनजाने में काटा जाना।

पुनर्जीवन: दक्षिण दिशा में बैठे एक व्यापारी के हाथी का सिर काटकर शिव द्वारा गणेश को पुनर्जीवित करना।

प्रायश्चित: व्यापारी के विलाप को शांत करने के लिए, शिव ने उसे एक अज्ञात यंत्र–'कोल्हू'– बनाने का ज्ञान दिया।

प्रथम तेली: उस व्यापारी ने तिलहन पेरकर तेल निकाला और वह सृष्टि का 'प्रथम तेली' कहलाया।

TELISOCIETY.COM

कोल्हू की पवित्र परंपरा: तकनीक और करुणा का संगम

ईश्वर का अवतार: बैल को साक्षात शिव का अवतार माना जाता था। परिवार उसे अपने पुत्र के समान प्रेम और सम्मान देता था।

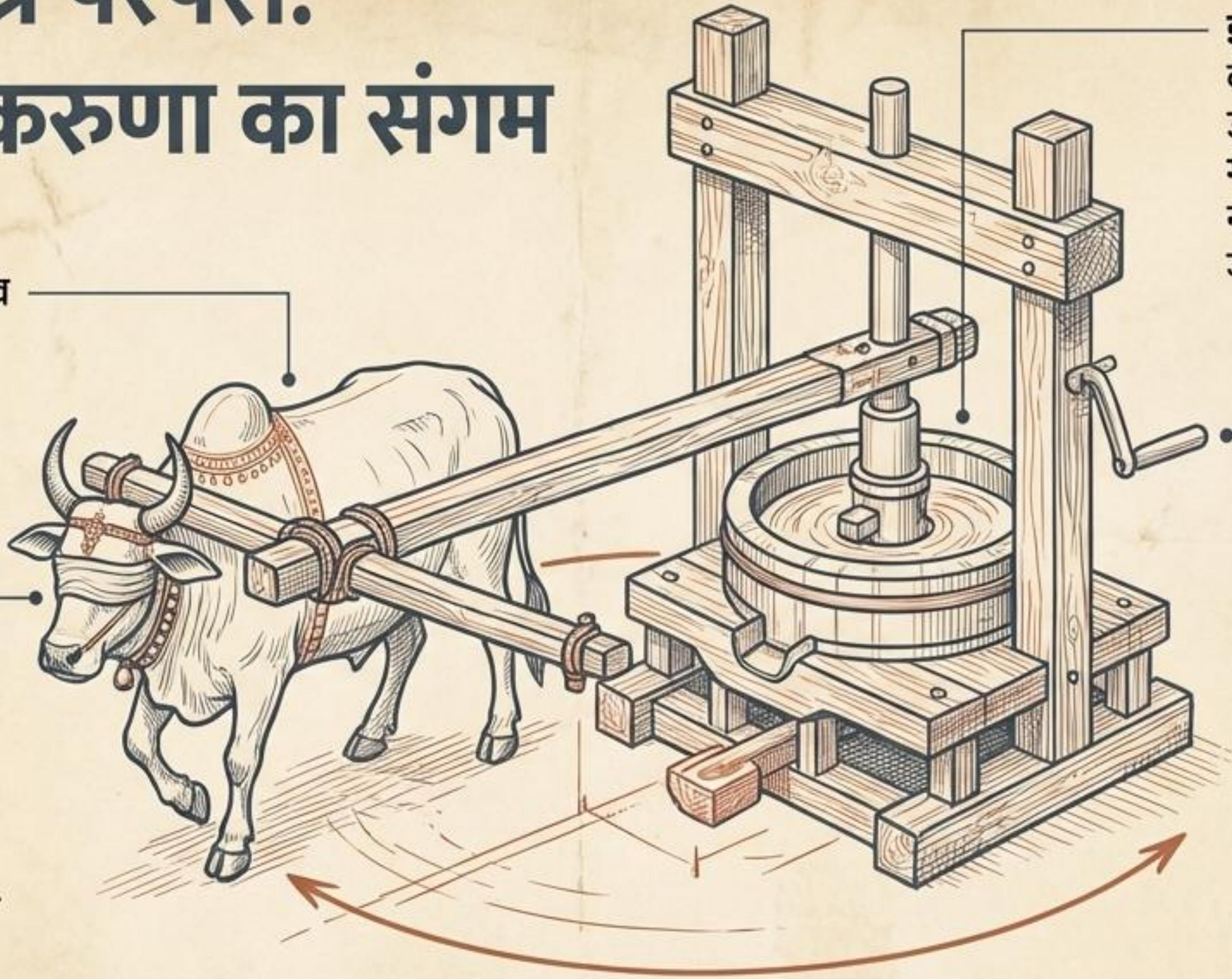

झापड़ (The Blindfold): बैल की आंखों पर बंधा कपड़ा केवल उपकरण नहीं, करुणा का प्रतीक था। गोल-गोल घूमने से बैल को चक्कर न आएं, इसलिए यह 'झापड़' बांधा जाता था।

झापड़ (The Blindfold): बैल की आंखों पर बंधा कपड़ा केवल उपकरण नहीं, करुणा का प्रतीक था। गोल-गोल घूमने से बैल को चक्कर न आएं, इसलिए यह 'झापड़' बांधा जाता था।

सोमवार का विश्राम: शिव की पूजा के दिन (सोमवार) कोल्हू को पूरी को तरह बंद रखा जाता था।

यह सिर्फ व्यवसाय नहीं था, यह प्रकृति, पशु और ईश्वर के प्रति एक गहरी आध्यात्मिक आराधना थी।

TELISOCIETY.COM

स्वर्ण युग की जड़ें: गुप्त वंश और राजा बालादित्य

- **ऐतिहासिक प्रमाण:** चीनी यात्री ह्वेनसांग और ब्रिटिश इतिहासकार कनिंघम के दस्तावेजों में स्पष्ट उल्लेख।
- **तेलाधक वंश:** ह्वेनसांग ने राजा बालादित्य को 'तेलाधक वंश' का बताया था।
- **गुप्त साम्राज्य से संबंध:** राजा बालादित्य का सीधा संबंध महान गुप्त वंश से माना जाता है। नालंदा में उनके द्वारा बनवाया गया स्तूप आज भी इसका प्रमाण है।
- **गरुड़ चिह्न:** इसी ऐतिहासिक आधार पर, उत्तर भारत के तेली संगठनों ने गुप्त वंश के राजचिह्न 'गरुड़' को अपने ध्वज में गर्व के साथ स्थान दिया है।

TELISOCIETY.COM

वर्ण और सामाजिक परिवर्तन का मैट्रिक्स

तलवार से कोल्हू तक: राठौड़ और तेली समाज

- **वर्ष 1191 ई., गुजरात (पाटन):** चालुक्य वंश के राजा एक विशाल मंदिर का निर्माण करा रहे थे।
- **संकट:** दिन-रात काम के लिए मशालों हेतु भारी मात्रा में तेल की आवश्यकता थी। दबाव के कारण मूल तेल निकालने वाले भाग गए।
- **क्षत्रियों का बलिदान:** मंदिर निर्माण रुकने के डर से और राजा के आदेश पर, कुछ वीर राजपूत क्षत्रियों ने स्वेच्छा से धानी (कोल्हू) चलाने का कार्य अपनाया।
- **नई पहचान:** समाज द्वारा तिरस्कृत होने के बाद, ये वीर आवू चले गए और हमेशा के लिए यह पेशा अपना लिया। आज इन्हीं के वंशज राठौड़ तेली कहलाते हैं।

TELISOCIETY.COM

समाज के महानायक: शूरवीर और राष्ट्र-रक्षक (शक्ति)

Teli Samaj

सम्राट हेमू विक्रमादित्य

- **परिचय:** दिल्ली के सिंहासन पर बैठने वाले अंतिम हिंदू सम्राट।
- **योगदान:** अपनी असाधारण सैन्य क्षमता से मुगलों को चुनौती दी और भारतीय इतिहास में अद्वितीय शौर्य का प्रदर्शन किया।

दानवीर भामाशाह

- **परिचय:** मेवाड़ के रक्षक और महाराणा प्रताप के परम मित्र।
- **योगदान:** जब महाराणा प्रताप को मुगलों से लड़ने के लिए धन की आवश्यकता थी, तब भामाशाह ने अपनी सारी संपत्ति राष्ट्र-रक्षा के लिए दान कर दी और भील सेना को संगठित किया।

TELISOCIETY.COM

समाज के महानायक: संत और भक्त (भक्ति)

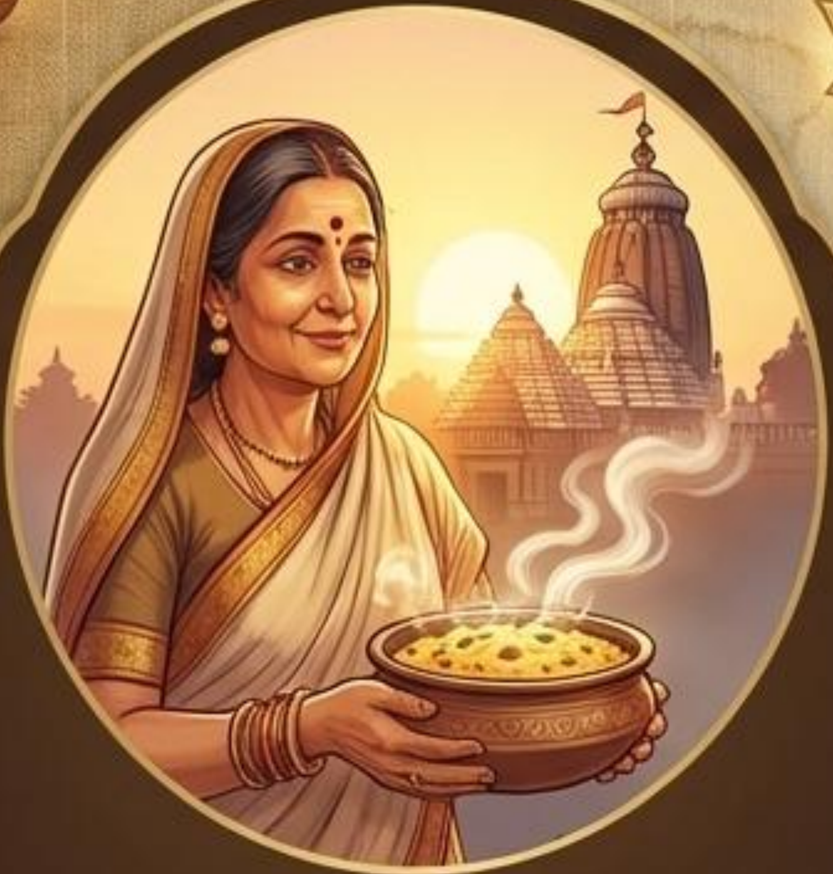

भक्त शिरोमणि माँ कर्मा बाई

- **कथा:** राजा के अहंकार को तोड़ते हुए अपनी प्रार्थना से मात्र 3 दिन में तालाब को तेल से भर दिया।
- **जगन्नाथ पुरी:** भगवान जगन्नाथ स्वयं सुबह उनके घर खिचड़ी का भोग खाने आते थे।

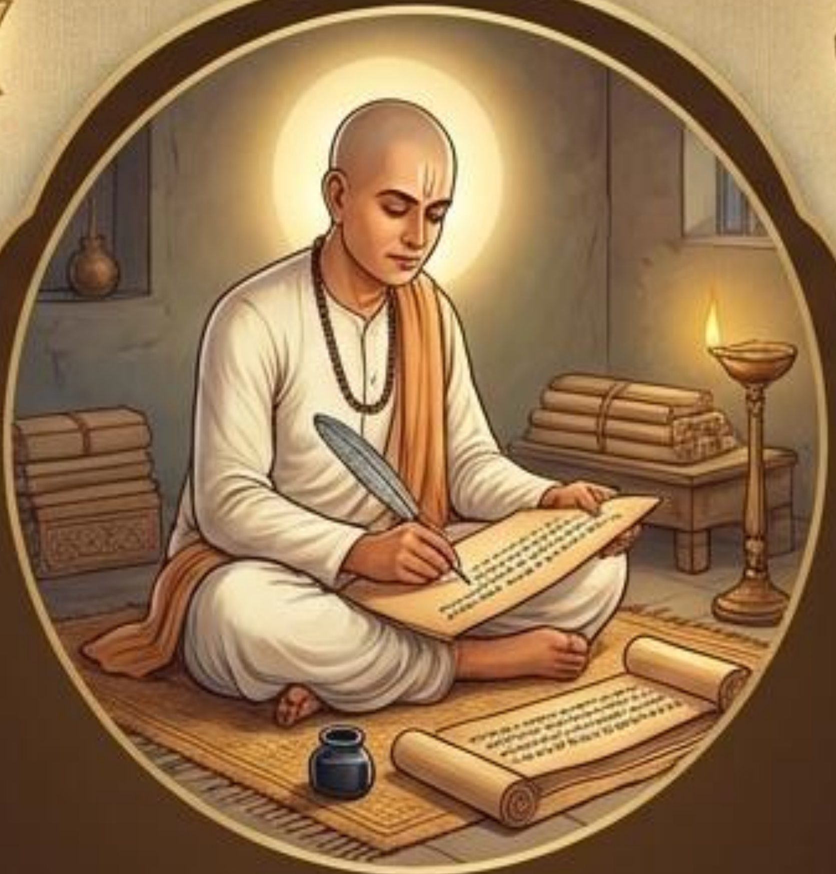

संत संताजी जगनाडे

- **कथा:** महाराष्ट्र में महान संत तुकाराम के परम शिष्य।
- **विरासत:** उनके द्वारा सहेजे गए 'अभंगों' को पांचवें वेद का दर्जा प्राप्त है।

गुरु गोरखनाथ

- **कथा:** नाथ संप्रदाय के संस्थापक।
- **विरासत:** उन्होंने स्वयं अपने श्लोकों में अपनी जाति तेली बताई थी, जो समाज के गहरे आध्यात्मिक प्रभाव को दर्शाता है।

Teli Samaj
TELISOCIETY.COM

नाम अनेक, समाज एक: भौगोलिक विस्तार

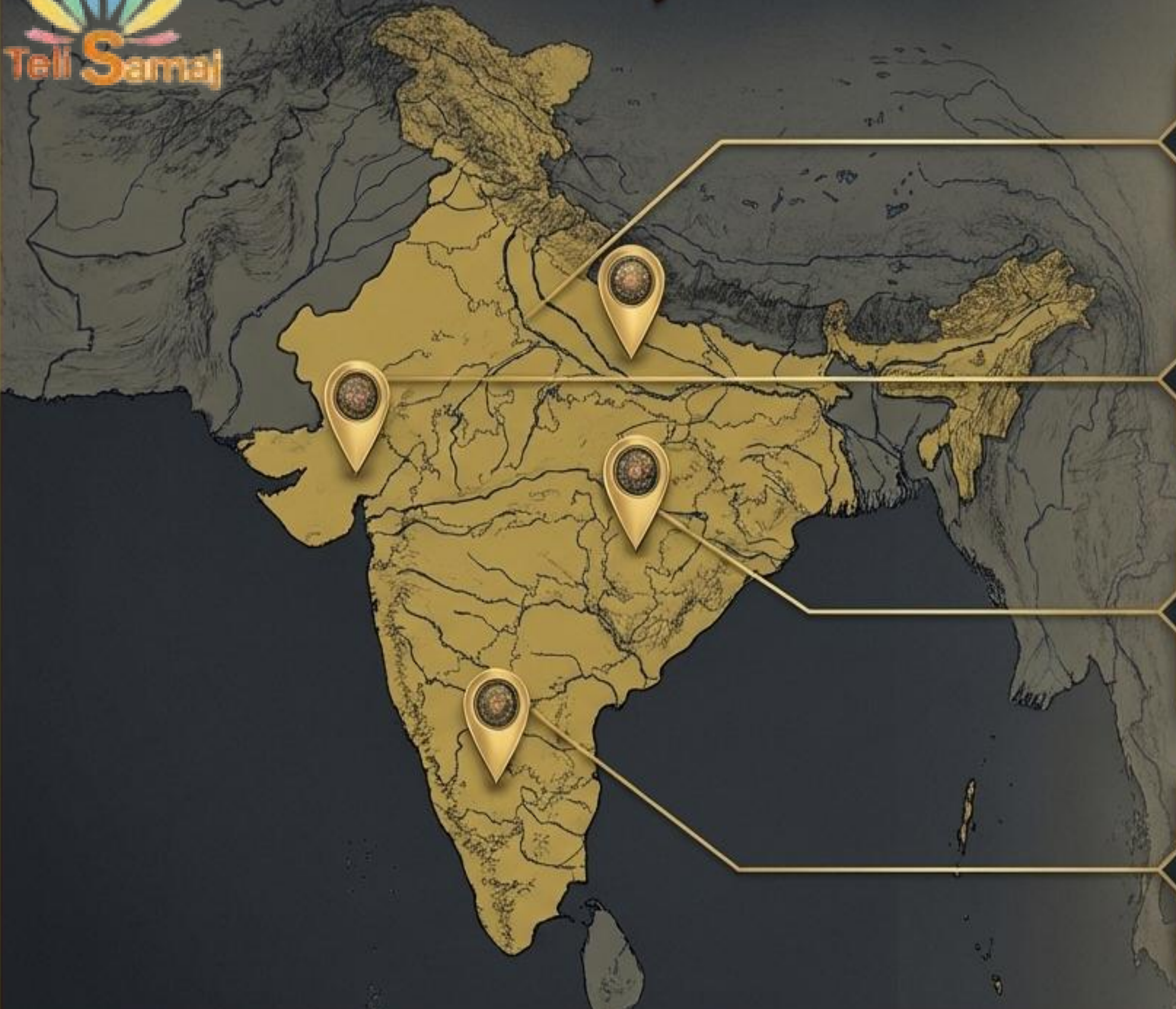

उत्तर प्रदेश / बिहार / झारखंड: साहू, गुप्ता, साहूकार, राठौड़ (वैश्य समाज का अभिन्न अंग)।

गुजरात / राजस्थान: घांची, मोढ़ बनिया, गांधी, चौधरी।

मध्य प्रदेश / छत्तीसगढ़: साहू (तेली तालाब, तेली का मंदिर जैसी ऐतिहासिक धरोहरों के निर्माता)।

दक्षिण भारत: गनिगा, चेट्टियार, वनियार (9वीं-13वीं सदी के महान मंदिर निर्माता और वित्तपोषक)।

Teli Samaj
TELISOCIETY.COM

धर्म की सीमाओं से परेः एक बहु-धार्मिक ताना-बाना

मुस्लिम तेली (मलिक / मंसूरी)

- समय के साथ धर्मांतरण या व्यवसाय अपनाने के कारण बने। उत्तर भारत में 'शेख मंसूरी', और पाकिस्तान में 'तेली मलिक' कहलाते हैं।
- रोशनदार तेलीः समाज को रोशन करने वाले। आज भी मुख्य रूप से पारंपरिक व्यवसाय से जुड़े हैं और सुन्नी इस्लाम का पालन करते हैं।

पारसी तेली

- महाराष्ट्र में इन्हें 'शनिचर तेली' भी कहा जाता था।
- यह नाम शबात (शनिवार) को काम न करने की यहूदी/पारसी परंपराओं के संदर्भ में दिया गया था।

TELISOCIETY.COM

20वीं सदी: सामाजिक जागरण और नई पहचान

1911

सामाजिक उत्थान की लहर। समुदाय ने 'राठौड़ तेली' उपनाम को अपनाकर अपने गौरवशाली क्षत्रिय इतिहास को पुनर्जीवित किया।

आर्य समाज का प्रभाव

श्री सत्यव्रत शर्मा द्विवेदी ने 'तेलीवर्ण प्रकाश' पत्रिका प्रकाशित कर समाज को वैश्य वर्ण के रूप में स्थापित करने का ऐतिहासिक प्रयास किया।

1931

समुदाय ने स्वयं को 'राठौड़-वेश्य' घोषित किया, जो भारतीय समाज में ऊर्ध्वगामी गतिशीलता (Upward Mobility) का बेहतरीन उदाहरण था।

प्रेरणा स्रोत

कोल्हापुर के छत्रपति शाहू महाराज (जिन्होंने दलितों/पिछड़ों के लिए आरक्षण शुरू किया) को तेली समाज आज भी अपना प्रमुख प्रेरणा स्रोत मानता है।

TELISOCIETY.COM

Teli Samaj

आधुनिक युग: व्यापार से लेकर सत्ता के शिखर तक

राष्ट्रीय नेतृत्व

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

(गुजरात के मोढ़ घांची तेली समाज से)।

झारखंड

रघुवर दास

(राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री, साहू/तेली समाज के कद्दावर नेता)।

बिहार (ओबीसी की राजनीति)

2.81% आवादी (तेली जाति)

औल 2015 में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार द्वारा तेली जाति को अत्यंत पिछड़ा वर्ग (EBC) में शामिल करने का ऐतिहासिक निर्णय।

दक्षिण भारत

बी.एस. येदियुरप्पा

(कर्नाटक के पूर्व सीएम - गनिगा)

आर.के. शणमुखम चेट्टी

(आज़ाद भारत के पहले वित्त मंत्री - चेट्टियार)।

TELISOCIETY.COM

Teli Samaj

झारखंड का संघर्ष: आरक्षण, अधिकार और आदिवासी पहचान

18-22%

जनसांख्यिकी ताकत: 37 लाख आबादी का दावा

- **जनसांख्यिकी ताकत:** झारखंड में **18-22% (लगभग 37 लाख)** आबादी का दावा। सिंहभूम को छोड़कर पूरे राज्य में गहरा प्रभाव।
- **आर्थिक और ऐतिहासिक जड़ें:** हजारीबाग, पलामू और रांची में पुरानी हवेलियां और धर्मशालाएं समाज की ऐतिहासिक समृद्धि की गवाह हैं।

- **ST दर्जे की मांग:** 2018 में सरकार द्वारा तेली और कुर्मी जातियों को **अनुसूचित जनजाति (ST)** में शामिल करने का प्रयास किया गया।
- **आदिवासी आक्रोश महारैली: 'जय आदिवासी युवा शक्ति' (JAY)** द्वारा इस कदम का भारी विरोध। समाज आज भी अपने संवैधानिक अधिकारों के लिए **संघर्षरत** है।

TELISOCIETY.COM

Teli Samaj
विकास का वक्र: एक निरंतर यात्रा
चरण 1: उत्पादक
(प्राचीन काल)
कोल्हू से तेल निकालना,
मंदिरों को रोशन करना
(तेलाधक वंश, गुप्त काल)।
चरण 2: रक्षक और
वित्तपोषक (मध्यकाल)
मुस्लिम आक्रमणों का सामना,
युद्ध में भागीदारी, और राज्य
को वित्तपोपण
(भामाशाह, हेमू)।
चरण 3: व्यापारी और
समाज सुधारक
(19वीं-20वीं सदी)
साहूकार बनना, उपनामों का
विस्तार (राठौड़, वैश्य), और
सामाजिक संगठन का उदय।
चरण 4: आधुनिक
नीति-निर्माता (21वीं सदी)
राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय
राजनीति का नेतृत्व, और
अधिकारों (EBC/ST) के
लिए संवैधानिक संघर्ष।
TELISOCIETY.COM

Teli Samaj
कोल्हू रुक गया है, लेकिन गति जारी है।
जिस समाज ने सदियों तक खुद को समय के कोल्हू में पीसा, उसने केवल तेल नहीं निकाला...
उसने व्यापार का साम्राज्य खड़ा किया, धर्म की रक्षा की, और आज, वह दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र का मार्गदर्शन कर रहा है।
तेली समाज: भारतीय इतिहास का एक अमिट और स्वर्णिम अध्याय।
TELISOCIETY.COM